6

बाल्यावस्था में मनोसामाजिक विकास की रूपरेखा

कृष्ण चन्द्र चौधरी*
प्रभात कुमार मिश्र**

प्रत्येक बच्चा अपने आप में अलग एवं अनोखा होता है और विशेष क्षमताएँ लिए जन्म लेता है, जिन्हें आगे और विकसित किया जा सकता है। अच्छा प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा केंद्र बच्चों की इन क्षमताओं एवं भिन्नताओं का सम्मान करता है। बच्चे का विकास, विकास के विभिन्न पहलुओं से प्रभावित होता है, जो शारीरिक, मनोसामाजिक, भौतिक, भावनात्मक एवं बौद्धिक विकास को सुनिश्चित करता है। विकास के सभी पहलुओं का एक-दूसरे पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने का उद्देश्य उन्हें प्रारंभिक बाल्यावस्था में समग्र रूप से विकसित होने में सहायता करना और उन्हें विकास के स्तर को प्राप्त करने में हर संभव सहायता प्रदान करना है। प्रस्तुत लेख इसी संदर्भ में बच्चों के मनोसामाजिक विकास के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से समझने की कोशिश करता है।

बच्चे खेल से सीखते हैं और प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा का आधार खेल एवं कला है। बच्चों के विकास एवं सीखने में खेल केंद्र में होता है। बच्चे मिल-जुलकर खेलते हैं, जिससे मनोसामाजिक विकास होता है।

बच्चों के सहज खेल उन्हें खोज, प्रयोग, जिज्ञासा, अवसर, मार्गदर्शन, सहायता, सहयोग, चुनौती, समस्या समाधान आदि के अवसर देते हैं जो ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया के प्रमुख अंग हैं। बच्चे विभिन्न प्रकार के खेलों में संलग्न होते हैं, जैसे— शारीरिक खेल, भाषाई खेल, नाटक, निर्माणात्मक खेल एवं नियमबद्ध खेल। ये खेल बच्चों के सीखने के प्रति दृष्टिकोण, सोच एवं प्रेरणा को निर्धारित करते हैं। ज्ञान निर्माण के प्रति सकारात्मक सोच एवं अभिरुचियाँ बच्चों के आगे आने वाले जीवन को भी प्रभावित करती है। बच्चों के विकास को प्रमुख पाँच क्षेत्रों की सहायता से समझा जा सकता है।

प्रारंभिक बाल शिक्षा का उद्देश्य शिशु का संपूर्ण विकास करना है। जन्म से तीन साल तक बच्चे घर-परिवार में रहते हैं। कहीं-कहीं कामकाजी महिलाएँ एवं एकाकी परिवार में बच्चे *क्रैश* में रहते हैं।

**असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* मनोविज्ञान विभाग, एस.बी. कॉलेज, (वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय) मौलाबाग, आरा, ज़िला-भोजपुर (बिहार) 802301
***प्रोफ़ेसर,* शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110016

© NCERT not to be republished

2–3 साल के बच्चों के लिए डे-केयर तथा अनौपचारिक शिक्षा व्यवस्था देखने को मिलती है। 3–6 साल की आयु के बच्चे आँगनबाड़ी या पूर्व-प्राथमिक शालाओं में जाते हैं। आँगनबाड़ी/ पूर्व-प्राथमिक शालाओं में नियोजित अनौपचारिक शिक्षा प्रक्रिया देखने को मिलती है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में बाल्यावस्था का अत्यधिक महत्व है क्योंकि बाल्यावस्था जीवन की सर्वाधिक संवेदनशील अवस्था है और जीवन की आरंभिक अवस्था है। इस अवस्था में बच्चा सबसे तीव्रगति से सीखता है। जीवन के प्रारंभिक 8 वर्ष विकास की दर के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। विकास की दर इस चरण में जीवन के बाकी चरणों से अधिक तीव्र होती है। मनुष्य के मस्तिष्क से संबंधित कई शोधों ने इस तथ्य को पुख्ता किया है कि मस्तिष्क का 90 प्रतिशत विकास इस उम्र तक हो जाता है। शोध इस बात को भी पुख्ता करते हैं कि मस्तिष्क का विकास; स्वास्थ्य, भोजन एवं देखभाल की गुणवत्ता पर निर्भर होने के साथ मनोसामाजिक वातावरण की गुणवत्ता पर भी निर्भर करता है जिसमें बच्चे अपने प्रारंभिक वर्ष व्यतीत करते हैं।

सामाजिक एवं भावनात्मक विकास

जन्म के समय बच्चा न तो सामाजिक होता है और न ही असामाजिक, सिर्फ़ तीन महीने में मुस्कुराने लगता है और प्यार का प्रत्युत्तर भी देता है। छह महीने में वह जाने-पहचाने व्यक्ति एवं अजनबी में भेद कर पाता है। एक वर्ष की आयु में छोटे-मोटे खेल खेल सकता है और डेढ़ वर्ष की आयु मे अनजाने लोगों के सामने शर्माने लगता है। दो वर्ष की आयु तक उसे अपने हमउम्र बच्चों का साथ अच्छा लगने लगता है। अब वह गुस्सा भी करने लगता है और परिवार में नए बच्चे के आगमन का प्रतिकार करता है। उसमें परिवारजनों से बिछड़ने का डर बढ़ जाता है। अपने माता-पिता की नकल करना उसे अच्छा लगता है। तीन साल की आयु तक अपने माता-पिता के लिए प्रेम प्रदर्शन करता है और सहयोगात्मक खेल खेलता है।

एक-दूसरे से स्नेहपूर्ण समानतायुक्त व्यवहार सामाजिक संबंधों की पहली नींव है। स्वयं की भावनाओं को पहचानना, समझना एवं दूसरों की भावनात्मक स्थिति को समझकर व्यवहार करना, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना, अपने साथियों एवं वयस्कों से सहज रिश्ता कायम करना ही सामाजिक व भावनात्मक विकास का प्रमुख उद्देश्य है। सामाजिक विकास से बच्चे परिवार, साथियों, शिक्षकों और समाज से सहज संबंध स्थापित करना सीखते हैं।

सामाजिक विकास लोगों के साथ बातचीत करने, संबंधों को विकसित करने और बनाए रखने, साझा करने, सहयोग और एक समूह में रहने में बच्चे की क्षमता को दर्शाता है। सामाजिक विकास में बच्चे जटिल सामाजिक परिस्थितियों में समान व्यवहार करने में सक्षम तथा सामूहिक रूप से काम करना सीखते हैं। यद्यपि बच्चे अनुकरण, प्रतिस्पर्धा, आक्रामकता, झगड़े, सहयोग, स्वार्थपरकता, सहानुभूति, सामाजिक स्वीकार्यता आदि से सामाजिक रूप से परिपक्व होते हैं। इसमें उस समाज के सामाजिक मानदंडों को सीखना शामिल है जिसमें वह बड़ा हो रहा है और समाज का एक उत्पादक सदस्य होने के लिए परिपक्व होता है।

बच्चे के व्यवहार एवं जीवन की विशेषताओं का ऐसा विकास होना चाहिए जिससे वे अपने

© NCERT not to be republished

आपको किसी भी जगह एवं किसी भी वातावरण में अच्छी तरह से ढाल सकें। बच्चे की समस्त क्रियाएँ एवं व्यवहार उसके संवेगों पर निर्भर करते हैं। संवेगों के संतुलित विकास पर ही उसका सामाजिक विकास आधारित होता है। बच्चे के संवेगात्मक विकास में खेल की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चे नाटकीय खेलों, जैसे— गुड़िया का खेल, शिक्षक एवं विद्यालय का खेल, चोर-सिपाही का खेल, घर-घर का खेल इत्यादि द्वारा अपने नकारात्मक संवेगों से मुक्ति पाते हैं। इस विकास के अंतर्गत तीन मूल आधार हैं— व्यक्तिगत, सामाजिक और वातावरण।

भावनात्मक विकास प्रेम, क्रोध, भय, खुशी, प्रसन्नता व अन्य भावनाओं के साथ ही मनोसामाजिक रूप से स्वीकार्य और उचित तरीके से इन भावनाओं को

बाल्यावस्था में भावनात्मक विकास-क्रम	
भावनात्मक विकास	***क्रमश:***
आनंद, आश्चर्य, परेशानी, घबराहट	जन्म के समय
प्रसन्नता	6 – 8 माह
क्रोध	3 – 4 माह
दुख, भय	8 – 9 माह
सौम्य, स्नेह, लज्जा	12 – 18 माह
गर्व, घमंड	24 माह (2 वर्ष)
ग्लानि, ईर्ष्या	3 – 4 वर्ष
असुरक्षा, नम्रता, विश्वास	5 – 6 वर्ष

स्रोत— दि प्राइमरी स्कूल चाइल्ड— डेवलपमेंट एंड एजुकेशन (2000

व्यक्त करके सीखने के तरीकों के उद्‌भव को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, दो वर्ष के बच्चे को दूसरों को मारने के लिए माफ़ किया जा सकता है, लेकिन एक बड़े बच्चे को शारीरिक आक्रामकता नियंत्रित करनी होगी और मारने के अलावा अन्य तरीकों से आवेग व्यक्त करना सीखना होगा। इस तरह भावनात्मक विकास सिर्फ़ भावनाओं का अनुभव नहीं है, बल्कि उनकी उचित अभिव्यक्ति भी है।)

सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का उद्देश्य

अपने संवेगों पर नियंत्रण कर पाना, अच्छी आदतों का विकास, अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करना, समूह में कार्य करना, शाला के विभिन्न क्रियाकलापों में सहयोग देना, अपनी भावनाओं को प्रकट करना, आत्मनिर्भर होना और परिस्थिति अनुसार वांछित व्यवहार करना है।।

सामाजिक एवं भावनात्मक विकास के लिए खेल गतिविधियाँ

सभी प्रकार के सामूहिक खेल, त्योहार एवं राष्ट्रीय पर्व मनाना, रेत, मिट्‌टी-पानी से खेलना, अभिनय, रचनात्मक क्रियाएँ, गुड़िया-घर में खेलना व अदला-बदली का खेल आदि।

पूर्व-प्राथमिक शालाओं में शिक्षिका

सामाजिक विकास के लिए गतिविधियाँ

- सामाजिक गतिविधियाँ
- सामूहिक खेल गीत
- समूह में नाटकीयकरण
- जन्मदिन मनाना, त्योहार मनाना
- बाल-मेला मनाना, प्रकृति भ्रमण
- राष्ट्रीय दिवस मनाना

खेल संबंधित क्रियाएँ

- बच्चों की भावनाओं एवं अधिकारों का आदर करना।

© NCERT not to be republished

- दूसरों को सुनना और विचारों का आदान-प्रदान करना।
- अन्य लोगों को सहयोग देना तथा भागीदारी करना।
- अपनी बारी की प्रतीक्षा करना इत्यादि।

वयस्कों के संबंध में विकास खेल गतिविधियाँ

वयस्कों की बातें सुनना तथा उनके निर्देशों को समझना।

- अपने व्यवहार पर नियंत्रण करना।
- विभिन्न परिस्थितियों का सामना करना इत्यादि।

बच्चों के व्यवहार, गुणों और क्षमताओं में बहुत अधिक व्यक्तिगत भिन्नता होती है। कुछ बच्चे बहुत सक्रिय होते है और कुछ बच्चे संकोची प्रतीत होते हैं। हर बच्चे का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व होता है। यह कुछ अंश तक जन्मजात होता है किंतु बहुत कुछ यह बच्चों के पर्यावरण पर निर्भर करता है।

पूर्व-प्राथमिक शाला में भावनात्मक गतिविधियाँ

शिक्षिका को बच्चों में भावनात्मक विकास के लिए निम्न गतिविधियाँ करवानी चाहिए—

- रचनात्मक गतिविधियाँ, जैसे— चित्रकला, छापना, रंग भरना, रेत या मिट्टी के ढेर को कुचलना-रौंदना, फाड़ना-चिपकाना, मिट्टी से खिलौने आदि बनाना।
- पानी से खेलना
- मिट्टी से खेलना
- गुड़ियों से खेलना
- सृजनात्मक क्रिया-कलाप
- भागना-दौड़ना, उछलना-कूदना, फाँदना, छलांग लगाना, रेंगना-सरकना
- नाटकीयकरण
- सजना-सँवरना

बाल जीवन में शाला-पूर्व शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस दौरान बच्चे के व्यवहार, सोच-विचार की प्रक्रियाओं, भावनाओं और रवैयों में परिवर्तन होते रहते हैं। इस उम्र (0–8 वर्ष) में बच्चों के उचित मनोवैज्ञानिक, शारीरिक तथा सामाजिक विकास की नींव रखी जाती है। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, वैसे-वैसे ही उनके मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक एवं प्रवृत्यात्मक व्यवहार का विकास होता जाता है। फलतः शाला-पूर्व शिक्षा के अंतर्गत बच्चे की प्रारंभिक बाल्यावस्था में सामाजिक, भावनात्मक, सृजनात्मक, संज्ञानात्मक, रचनात्मक, शारीरिक, मनोसामाजिक, मानसिक तथा सौंदर्यबोध के विकास के लिए सहज, आनंदपूर्ण एवं उत्प्रेरक परिवेश देने और बाल विकास सुनिश्चित करने के लिए सौहार्द्रपूर्ण वातावरण प्रदान करना आवश्यक है। इस तरह मनोसामाजिक, संज्ञानात्मक, भाषा, शारीरिक गतिशीलता-विकास के साथ रचनात्मकता, सौंदर्यबोध, विज्ञान की प्रारंभिक जानकारी आदि शाला-पूर्व शिक्षा में प्रदान की जाती है। बच्चों के व्यक्तित्व का अधिकतम विकास इन्हीं वर्षों (3–8 आयुवर्ग) में होता है, जो बच्चों की शाला-पूर्व शिक्षा की आवश्यकता को पूरी करता है। बच्चे अपने जीवन के प्रथम चरण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया से गुजरते है, जिसमें उन्हें बौद्धिक प्रेरणा प्रदान करके वांछनीय अभिवृत्तियाँ विकसित करने और मनोसामाजिक रूप से सशक्त बनाने का कार्य किया जाना चाहिए। अतः वर्तमान युग में मनोसामाजिक, व्यावहारिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक कारक मानव तथा उसके परिवेश को प्रभावित कर रहे हैं। फलतः बच्चे के जीवन के पहले 8 वर्ष बहुत

© NCERT not to be republished

महत्वपूर्ण हैं। यह तथ्य पूरे विश्व में सर्वमान्य है क्योंकि इस आयु में चहुँमुखी विकास की गति बहुत तेज़ होती है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिशु केंद्र में शिशु की विशेष आवश्यकता, सुरक्षित महसूस करने अथवा स्वीकार किये जाने, की भावना की पूर्ति होनी चाहिए। केंद्र में आना शिशु के लिए अपने घर को छोड़कर आने का पहला मौका होता है। घर के वातावरण में शिशु सुरक्षित महसूस करता है। शिशु केंद्र में उसे अपने आप को उस वातावरण में सुरक्षित महसूस होना चाहिए। शिशु केंद्र का वातावरण ऐसा होना चाहिए जो उसके इस समायोजन में सहायक हो।

शिक्षिका क्या करें

- हर बच्चे पर ध्यान दें।
- बच्चे को उसके नाम से पुकारें, इससे उसमें आत्म-गौरव की भावना जागेगी।
- बच्चों की बराबर प्रशंसा करें और उन्हें प्रोत्साहित करें। हर बच्चे को सफलता का स्वाद मिलना चाहिए।
- हर बच्चे के गुणों को उजागर करने की कोशिश करें।
- हर बच्चे की भावना को मौखिक स्वीकृति दें और उसे अपनी भावनाओं को सामाजिक अपेक्षा के अनुसार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बच्चों को रचनात्मक अभिनयात्मक क्रियाओं, संगीत भूमिका अभिनीत करना तथा रचनात्मक क्रियाओं के माध्यम से अपनी भावनाओं के प्रकाशन का अवसर दें।

शिक्षिका क्या न करें

- बच्चे की तुलना न करें। हर बच्चा अपने में विशिष्ट है और उसे वैसा ही समझना चाहिए।
- बच्चों की आलोचना या अपमान न करें। इससे उनके अंदर हीन-भावना उपजती है।
- बच्चों को मारे-पीटें नहीं और उन्हें गाली भी न दें। वे आपका अनुकरण करेंगे और बुरा व्यवहार सीखेंगे।
- लड़के-लड़कियों को अलग-अलग प्रकार का व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित न करें।

निष्कर्ष

व्यक्ति को बाल्यावस्था में सबसे अधिक सहायता, संरक्षण, देखभाल के साथ प्रेम, सहानुभूति की आवश्यकता होती है जिससे उसका संतुलित व सर्वांगीण विकास हो सके। वास्तव में यह समाजीकरण की एक प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत परिवार और समाज में बच्चे स्वतंत्र एवं सुयोग्य नागरिक के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर सकें।

संदर्भ

चौधरी, के.सी. 2018. *प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल, विकास और शिक्षा*. बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना.

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, 2012. *शाला-पूर्व शिक्षा पाठ्यक्रम रूपरेखा, 2012*. भारत सरकार.

रंगनाथन, एन. 2000. *दि प्राइमरी स्कूल चाइल्ड— डेवलपमेंट एंड एजुकेशन*. ओरियंट लॉन्गमैन, नयी दिल्ली

रा.शै.अ.प्र.प. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished

———. 2006. *पोजिशन पेपर ऑन अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन*, नेशनल फोकस ग्रुप., राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

स्वामीनाथन, एम. 1987. *बच्चों के लिए खेल-क्रियाएँ*. यूनिसेफ़, नयी दिल्ली.

स्वामीनाथन, एम. और पी. डेनियल. 2004. *प्ले एक्टिवटीज़ फ़ॉर चाइल्ड डेवलपमेंट— ए गाइड टू प्री-स्कूल टीचर्स*. नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली.

सामाजिक विकास बच्चों के उन व्यवहारों तथा चरित्रगत विशेषताओं का विकास है जिसे उन्हें अपने सामाजिक वातावरण में अभियोजित होने में मदद मिलती है। संवेगात्मक विकास सामाजिक विकास के लिए आधार प्रस्तुत करता है क्योंकि इसका संबंध बच्चों के सामाजिक व्यवकार एवं अत:क्रियाओं से होता है।

प्रारंभिक बाल शिक्षा, प्रशिक्षार्शी पुस्तिका
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 1992

© NCERT not to be republished